अध्यात्म ज्ञान एवं चिन्तन संस्था

(SOCIETY FOR ADHYATMA STUDIES)

17, सिविल लाइन्स, कमिश्नर ऑफिस के सामने, मुरादाबाद – 244001

ॐ

अनुशासन

ॐ

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्नप्रमदि तव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देव पितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि। यान्यस्माक ँ सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि। ये के चास्मच्छ्रेयाँसो ब्राह्मणाः तेषां त्वयाऽऽसनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयाऽ देयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्। ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन्। तथा तत्र वर्तेथाः। अथाभ्याख्यातेषु। ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषु वर्तेरन्। तथा तेषु वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवमु चैतदुपास्यम्।	सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय में आलस्य मत करो। आचार्य को उचित धन देकर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करो संतान परम्परा का निर्वाह करो। सत्य से आलस्य न करो। धर्म से आलस्य न करो। कुशल कर्म से आलस्य न करो। समृद्धि देने वाले प्रगति के कर्मों से आलस्य न करो। स्वाध्याय और ब्रह्म ज्ञान प्रवचन से आलस्य न करो। देव कार्य और पितृ कार्यों से आलस्य न करो। तुम माता को देवता मानो, पिता को देवता मानो, आचार्य को देवता मानो और अतिथि को देवता मानो। जो दोषरहित कर्म हैं उन्ही का आचरण करो अन्य का नही। हमारे (गुरुजनों के) भी जो शुभ आचरण हैं केवल उन्ही का अनुपालन करो, अन्य का नही। हमसे जो श्रेष्ठ ब्राह्मण (आचार्य) आयें उनको आसन आदि देकर सेवा करो। दान श्रद्धा पूर्वक दो, अश्रद्धापूर्वक नहीं, अपनी धन–सम्पदा की सामर्थ्य के अनुसार दो, विनम्रता पूर्वक दो, लज्जा पूर्वक दो (कृपा मानते हुए दो), मैत्री के निर्वाह के लिए दो। यदि कर्म या आचार के विषय में कोई संदेह हो तो जो विचारशील, कर्मशील, सरल बुद्धि एवं धर्माभिलाषी विद्वान हों वे जैसा आचरण करें वैसा ही तुम करो। यही आदेश है, यही उपदेश है, यही वेद का वचन है और यही अनुशासन है। यही आचरण योग्य है।

.....तैत्तिरीय उपनिषद्